विश्व हिंदी समाचार

(विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक प्रकाशन)

www.vishwahindi.com

वर्ष: 8 अंक: 32 दिसंबर, 2015

हिंदी दिवस 2015 : विश्व भर में

14 सितंबर को 1949 को भारतीय संविधान सभा द्वारा हिंदी को भारत की राजभाषा बनाने के निर्णय के महत्व को प्रतिपादित करने के उद्देश्य से राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के अनुरोध पर सन् 1953 से संपूर्ण भारत में यह तिथि हिंदी-दिवस के रूप में मनायी जाती रही है। हिंदी के क्षेत्र के वैश्विक विस्तार के साथ कई वर्षों से विश्व के अनेक देशों में हिंदी प्रेमियों द्वारा यह दिवस अत्यंत निष्ठा के साथ मनाया जाता रहा है। 2015 में भारत के साथ-साथ अनेक देशों में विश्व हिंदी सम्मेलन के महाकुम्भ के साथ ही हिंदी दिवस अत्यंत सम्मानपूर्वक मनाया गया। विदेश में हिंदी दिवस के आयोजन की कुछ चयनित रिपोर्ट विश्व हिंदी समाचार के इस अंक में पाठकों के समक्ष प्रस्तुत हैं।

पृ. 2–3

अंतरराष्ट्रीय हिंदी निबंध प्रतियोगिता 2015 के परिणाम

विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा विश्व हिंदी दिवस 2016 के उपलक्ष्य में एक अंतरराष्ट्रीय हिंदी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। परिणामों की घोषणा जनवरी, 2016 में विश्व हिंदी दिवस समारोह के अवसर पर की गई। पाँच भौगोलिक क्षेत्रों के आधार पर प्रतियोगिता की पाँच श्रेणियाँ नियत की गई थीं। इस अंक में प्रस्तुत हैं 5 भौगोलिक क्षेत्रों के परिणाम।

पृ. 12

महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस में हिंदी दिवस के संदर्भ में सप्ताह भर की गतिविधियाँ

महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस में वर्ष 2015 के हिंदी दिवस के संदर्भ में संस्थान के हिंदी विभाग द्वारा 5 से 9 अक्टूबर तक हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया जिसके अंतर्गत स्वरचित कविता पाठ प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिता, अंत्याक्षरी प्रतियोगिता व पोस्टर प्रतियोगिता विशेष गतिविधियाँ रहीं। पृ. 4

महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस में पुरस्कार वितरण समारोह एवं 'वसंत चयनिका–भाग 2' और 'वसंत' का लोकार्पण

9 दिसंबर, 2015 को महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस में वार्षिक रूप से आयोजित सृजनात्मक लेखन प्रतियोगिता के संदर्भ में

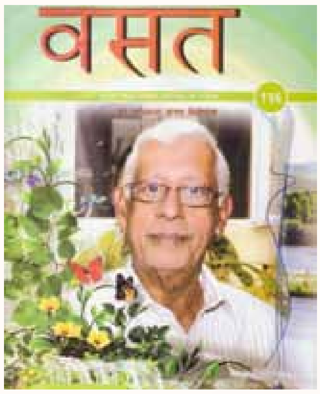

पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। अवसर पर संस्थान की 45वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में 'वसंत चयनिका-भाग 2' और सृजनात्मक लेखन एवं प्रकाशन विभाग की स्थापना की 40वीं वर्षगाँठ के संदर्भ में विभाग के प्रथम संपादक तथा मॉरीशस के मूर्धन्य लेखक श्री अभिमन्यु अनत पर संस्थान की 'वसंत' पत्रिका के विशेषांक का लोकार्पण भी किया गया।

पृ. 8

आगे पढ़ें :

- भोपाल में 'मीडिया की भूमिका: भाषा सीखना या सिखाना' विषय पर संगोष्ठी पृ. 6
- बर्मिंघम शहर में 'लेखनी सानिध्य, का आयोजन पृ. 6
- मंगल अभियान पर पहली हिंदी एटलस पुस्तक का विमोचन पृ. 7
- डॉ. महीप सिंह, श्री गोविंद मधुसूदन दाभोलकर व डॉ. नरेश पाण्डे को श्रद्धांजलि पृ. 11

ISSN 1694-2485

हिंदी दिवस 2015 : विश्व भर में

ऑस्ट्रेलिया

17 सितंबर, 2015 को हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में भारतीय विद्या भवन तथा इंडियन लिटेरेरी एंड आर्ट सोसायटी द्वारा न्यू साउथ वेल्स संसद भवन में युवा कविता प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। अवसर पर बहुसांस्कृतिकता मंत्री (Minister for Multiculturalism) माननीय श्री जॉन आजाका सहित पारामात्ता के सांसद डॉ. जेफ़ ली, एपिंग सांसद डामियें तुडहोप, ग्रांडविल सांसद जुलिया फ़िन तथा स्ट्राटफ़िल्ड सांसद जोडी लेयान माकके उपस्थित थे। समारोह के अंतर्गत हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कविता प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। पूरे आयोजन में भारतीय महावाणिज्य दूतावास, सिडनी तथा 'युवा ऑस्ट्रेलिया' का सहयोग रहा।

साभार : पब्लिक तेलेग्राफ़.कॉम

फ़्रांस

पेरिस स्थित भारतीय दूतावास ने कविता गर्ग की भारतीय भाषा विद्यालय के सहयोग से 14 सितंबर को हिंदी दिवस का आयोजन किया। समारोह में विशेष रूप से भारतीय राजदूत महामहिम श्री मोहन कुमार, उप-राजदूत श्री मनीष प्रभात तथा हिंदी अध्यापिका श्रीमती कविता गर्ग उपस्थित रहे। कविता गर्ग की भारतीय भाषा पाठशाला पिछले तीन वर्षों से हिंदी दिवस के अवसर पर अनेक गतिविधियों का आयोजन करती आई है। इस वर्ष राजदूतावास में एक हिंदी प्रतियोगिता, पेरिस के विशेष इलाकों की सैर, हिंदी फ़िल्म गीतों पर आधारित कार्यशाला, फ़्रांस के हिंदी छात्रों और फ़्रेंच सीख रहे भारतीय छात्रों के बीच बातचीत, हिंदी कहावतों पर सृजनात्मक कार्यशाला, हिंदी में भारतीय भोजन कार्यशाला और समापन समारोह के रूप में राजदूतावास में एक जश्न का आयोजन किया गया।

समारोह में हिंदी प्रतियोगिताओं के प्रतिभागियों को आयोजन की सभी सहयोगी संस्थाओं, भारतीय दूतावास, आसियाटेक प्रकाशन गृह, आयुर्वाना दवाई निर्माता कम्पनी और कविता गर्ग भारतीय भाषा विद्यालय द्वारा पुरस्कार और प्रमाण पत्र दिए गए।

साभार : भारतीय दूतावास, पेरिसका वेबसाइट

जमैका

14 सितंबर, 2015 को भारतीय उच्चायोग, किंग्सटन तथा जमैका के हिंदी संघ द्वारा चांसरी के परिसर में भव्य रूप से हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। अवसर पर उप-राजदूत श्री एच. के. मोहन ने अतिथियों को संबोधित किया। अवसर पर जमैका के हिंदी संघ के अध्यापक, डॉ. सीताराम पोद्दर भी उपस्थित थे।

साभार : भारतीय उच्चायोग, किंग्सटन, जमैका का वेबसाइट

कैंडी

14-26 सितंबर, 2015 को बदी-उद-दीन महमूद कॉलेज में भारतीय सहायक उच्चायोग, कैंडी द्वारा हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अंतर्गत कविता पाठ, श्रुतलेख, अंत्याक्षरी, हिंदी देश-भक्ति गान, सिंहला से हिंदी एवं हिंदी से सिंहला अनुवाद, निबंध, 'हिंदी फ़िल्म मुग़ल-ए-आज़म' प्रदर्शन, हिंदी टिप्पणी, वाद-विवाद प्रतियोगिताओं तथा पुस्तक प्रदर्शनी में हिंदी प्रेमियों की सक्रिय भागीदारी रही। 26 सितंबर को पुरस्कार वितरण समारोह तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

साभार: भारत का सहायक उच्चायोग, कैंडी

मास्को

18 सितंबर, 2015 को भारतीय राजदूतावास, मास्को के दुर्गा प्रसाद धर सभागार में जवाहरलाल नेहरू सांस्कृतिक केंद्र के तत्वावधान में हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में रूस में भारत के राजदूत श्री पी. एस. राघवन उपस्थित थे तथा मिशन के उप-प्रमुख श्री जी. बाला सुब्रमण्यम् ने भी अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। कार्यक्रम का शुभारंभ महामहिम राजदूत श्री पी. एस. राघवन द्वारा दीप प्रज्वलन से हुआ। अवसर पर 'दिशा' के सौजन्य से हिंदी की वरिष्ठ प्रोफ़ेसर ल्युदमिला ख़ख़लोवा को हिंदी के लिए 'भारत-मित्र सम्मान' प्रदान किया गया तथा 'दिशा' के संयोजक श्री रामेश्वर सिंह ने प्रति वर्ष रूस के हिंदी सेवी को 'भारत-मित्र सम्मान' देने की घोषणा की। साथ ही 'नई दिशा' त्रैमासिक पत्र का विमोचन भी हुआ। डॉ. गुलाब सिंह के मार्गदर्शन में छात्रों ने विभिन्न कार्यक्रम प्रस्तुत किए तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ. एस. एन. सिंह ने किया। समारोह में मास्को राजकीय विश्वविद्यालय, रूसी राजकीय मानविकी विश्वविद्यालय, अंतरराष्ट्रीय संबंध विश्वविद्यालय, विद्यालय क्र. 19, भारतीय राजदूतावास विद्यालय के छात्रों समेत 100 से अधिक लोगों ने भाग लिया।

साभार : मास्को, रूस राजदूतावास का वेबसाइट

वेलिंग्टन

26 सितंबर, 2015 को न्यू ज़ीलैंड के वेलिंग्टन हिंदी विद्यालय में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें सभी छात्रों ने कविता, संगीत, नृत्य, नाटक और भाषण प्रस्तुत किए। भारतीय उच्चायोग के उप-राजदूत महामहिम संदीप सूद ने सभी प्रतिभागियों को 'हिंदी दिवस 2015' मेडल प्रदान करते हुए उनकी प्रशंसा की तथा वेलिंग्टन हिंदी विद्यालय ने हिंदी दिवस के आयोजन के प्रायोजक विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस के प्रति आभार प्रकट किया।

श्रीमती सुनीता नारायण की रिपोर्ट

श्री लंका

20 सितंबर, 2015 को भारत के प्रधान कोंसलावास, हमबनतोटा द्वारा चांसरी हॉल में भव्य रूप से हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। अवसर पर हिंदी में श्रुतलेख, भाषण तथा संगीत प्रतियोगिताओं का आयोजन भी हुआ जिसमें 80 से अधिक प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। महावाणिज्यदूत द्वारा विजेताओं व प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र व पुरस्कार वितरित किए गए। समारोह में लगभग 140 लोग उपस्थित थे।

साभार : भारतीय महावाणिज्यदूतावास, हमबनतोटा, श्री लंका का वेबसाइट

फिजी

18 नवंबर, 2015 को ऋषिकुल प्राइमरी स्कूल, नसीनू में फिजी के हिंदी अध्यापक संघ द्वारा हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ऋषिकुल सनातन कॉलेज के प्रधानाचार्य श्री ज्ञान चन्द्र सुमेर थे। इस अवसर पर प्रतिभागियों के लिए भाषण प्रतियोगिता तथा कविता पठन प्रतियोगिता आयोजित कर विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। साथ-साथ शिक्षा मंत्रालय के हिंदी विभाग के प्रथम त्रैमासिक न्यूज़लेटर 'नव ज्योति' अंक 1 का विमोचन भारतीय उच्चायोग के द्वितीय सचिव श्री अनिल शर्मा द्वारा किया गया। समारोह में अनेक गणमान्य अतिथियों के साथ-साथ विभिन्न पाठशालाओं के विद्यार्थी व अध्यापक उपस्थित थे।

श्री ज्ञान प्रसाद की रिपोर्ट

ब्रसेल्स

14 सितंबर, 2015 को ब्रसेल्स के भारतीय दूतावास परिसर में हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। समारोह के अंतर्गत बेल्जियम, लक्ज़मबर्ग और यूरोपीय संघ में भारत के राजदूत मंजीव सिंह पुरी ने दूतावास में पिछले विश्व हिंदी सम्मेलन में सम्मानित बेल्जियम की पहली विद्वान, घेंट विश्वविद्यालय की प्राध्यापिका सार्ज वर्बेक को पुन: सम्मानित किया। पुरी जी ने बेल्जियमवासियों द्वारा हिंदी सीखने के लिए किए जा रहे प्रयासों की सराहना की तथा बेल्जियम की जनता के बीच हिंदी को लोकप्रियता दिलाने की कोशिशों को बढ़ावा दिए जाने पर भी ज़ोर दिया। अवसर पर भारतीय दूतावास ने विभिन्न विषयों पर इंटरनेट द्वारा पूरी दुनिया के प्रतिभागियों के लिए हिंदी में निबंध लेखन प्रतियोगिता का भी आयोजन किया। इंदौर के एक हिंदी प्रेमी को प्रथम पुरस्कार मिला तथा बेंगलूरु को तीसरा स्थान मिला।

साभार: पूरी दुनिया.कॉम

महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस में हिंदी दिवस के संदर्भ में सप्ताह भर की गतिविधियाँ

पुरस्कार वितरण समारोह में उपस्थित महानुभाव व विद्यार्थी तथा हिंदी प्रेमी

मॉरीशस स्थित महात्मा गांधी संस्थान में पिछले एक दशक से हिंदी दिवस के संदर्भ में सप्ताह भर की गतिविधियों के आयोजन की सुदृढ़ परम्परा स्थापित है। वर्ष 2015 के हिंदी दिवस के संदर्भ में संस्थान के हिंदी विभाग द्वारा 5 से 9 अक्टूबर तक हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया जिसके अंतर्गत स्वरचित कविता पाठ प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिता, अंत्याक्षरी प्रतियोगिता व पोस्टर प्रतियोगिता विशेष गतिविधियाँ रहीं। देश में तृतीयक स्तर की सबसे महत्वपूर्ण संस्था में हिंदी के उन्नयन में इन गतिविधियों के योगदान का आकलन इस बात से होता है कि इनमें संस्थान के भरपूर योगदान के साथ-साथ विश्व हिंदी सचिवालय का भी प्रायोजन होता है। इसी चलते हिंदी सप्ताह समारोहों का उद्घाटन 5 अक्टूबर, 2015 को महात्मा गांधी संस्थान के सुब्रमण्यम् भारती सभागार में विश्व हिंदी सचिवालय के कार्यवाहक महासचिव श्री गंगाधरसिंह सुखलाल के हाथों दीप प्रज्ज्वलन से हुआ।

स्वरचित कविता पाठ प्रतियोगिता

5 अक्टूबर को ही उद्घाटन समारोह के तुरंत बाद स्वरचित कविता पाठ प्रतियोगिता का आरम्भ हुआ। मुख्य अतिथि विश्व हिंदी सचिवालय के कार्यवाहक महासचिव श्री गंगाधरसिंह सुखलाल सहित निर्णायक मंडल के सदस्य डॉ. हेमराज सुन्दर तथा डॉ. अलका धनपत, विभाग और संस्थान के प्राध्यापकों व छात्रों ने प्रतियोगिता के लिए प्रतिभागियों द्वारा प्रस्तुत रचनाओं को सुना। प्रतियोगिता की विजेता बी.ए. द्वितीय वर्ष की प्रियादर्शनी रही। द्वितीय पुरस्कार बी.ए. तृतीय वर्ष की यशोदासिंह पिताई तथा तृतीय पुरस्कार विदूषी दस्सोया को प्राप्त हुआ। मंच संचालन का कार्यभार सुश्री अंजलि चिंतामणि ने उठाया।

भाषण प्रतियोगिता

6 अक्टूबर को भाषण प्रतियोगिता के लिए मॉरीशस ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन के समाचार विभाग के प्रमुख अधिकारी श्री केसन बधू मुख्य अतिथि रहे। सुकाली जया देवी प्रतियोगिता की विजेता बनी। सिबालक जयश्री को द्वितीय पुरस्कार तथा हुलास इश्वरी को तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

अत्यंत ही रोचक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन 7 अक्टूबर को किया गया। सरकारी हिंदी शिक्षक संघ के अध्यक्ष, श्री सत्यदेव टेंगर तथा हिंदी प्रचारिणी सभा के प्रधान, श्री यन्तुदेव बुधू ने मुख्य अतिथि के रूप में अपनी उपस्थिति दी। तृतीय वर्ष 'झलक' टोली को प्रथम पुरस्कार तथा द्वितीय पुरस्कार वी.एस.एस. टीम को प्राप्त हुआ।

नुक्कड़ नाटक तथा अंत्याक्षरी प्रतियोगिता

हिंदी सप्ताह के अंतर्गत सर्वाधिक प्रचलित दो प्रतियोगिताएँ नुक्कड़ नाटक तथा अंत्याक्षरी प्रतियोगिता क्रमश: 8 और 9 अक्टूबर को आयोजित हुए।

महात्मा गांधी संस्थान के इंडियन स्टडीज़ कॉम्प्लेक्स में नुक्कड़ नाटक के दर्शकों की भीड़ साल-दर-साल बढ़ती ही जा रही हैं। इस वर्ष भी छात्रों द्वारा देश और समाज से जुड़े अनेकानेक रोचक विषयों पर उत्कृष्ट नाटक प्रस्तुत किए गए। सर्वश्रेष्ठ नाटक का पुरस्कार बी.ए. तृतीय वर्ष 'बी.ए. की यात्रा और हिंदी भाषा' को गया। द्वितीय पुरस्कार बी.ए. द्वितीय वर्ष को प्राप्त हुआ।

9 अक्टूबर, 2015 को अंत्याक्षरी प्रतियोगिता के लिए 20 से अधिक टोलियाँ एकत्र हुईं। अपने मनपसंद गीतों की कुछ पंक्तियाँ सुनने के लिए संस्थान और संस्थान से बाहर के लोगों की भीड़ जमा हुई। प्रथम पुरस्कार विजेता जी.एन.एस. टीम की गीतिका किसुनदयाल, नंदिनी लक्ष्मण तथा श्वेता माणिक रहीं। द्वितीय स्थान पर टीम फ़िलेमेरिया की जया देवी सुकाली, उपासना सुखी तथा तृष्णा मुंगा आईं।

पोस्टर प्रतियोगिता

प्रत्येक हिंदी सप्ताह के समान इस वर्ष भी संस्थान की दीवारें हिंदी के पोस्टरों से रंगी हुई मिलीं। 'महात्मा गांधी संस्थान की 45वीं वर्षगाँठ' के इस

हिंदी सप्ताह में भाग लेनेवाले विद्यार्थी

वर्ष में प्रतियोगिता का केंद्रीय विषय भी संस्थान ही रहा। अंत्याक्षरी के समान ही हिंदी पोस्टर प्रतियोगिता में हिंदी विभाग के अलावा अन्य विभागों के छात्रों ने भी भाग लिया। प्रथम पुरस्कार बी.ए. तृतीय वर्ष की संजना बिसु, द्वितीय पुरस्कार बी.ए. तृतीय वर्ष की करिश्मा ओमोरी और तृतीय पुरस्कार कला विभाग की झमन विताशा को प्राप्त हुआ।

पुरस्कार वितरण समारोह

प्रतियोगिताओं के विजेता

हिंदी सप्ताह की गतिविधियों का समापन 12 अक्टूबर को पुरस्कार वितरण समारोह के साथ हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में शिक्षा व मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा एवं वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्री, श्रीमती लीला देवी दुकन-लछुमन की उपस्थिति से शोभा बढ़ी। उन्होंने सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को बधाई देते हुए उनको हिंदी भाषा में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। साथ-साथ महात्मा गांधी संस्थान तथा आर.टी.आई. की महानिदेशिका श्रीमती गयान ने कहा कि "विविध गतिविधियों में भाग लेकर छात्र-छात्राएँ अपनी सृजन शक्ति तथा भाषा कौशल को उमंग-उत्साह के साथ अभिव्यक्त करते हैं।" महात्मा गांधी संस्थान की निदेशिका डॉ. कुंजल ने हिंदी भाषा के प्रति अपनी निष्ठा और अपनी भाषिक योग्यता प्रदर्शित करने के मंच के रूप में हिंदी सप्ताह के महत्व को रेखांकित किया। इस अवसर पर श्रीमती लीला देवी दुकन-लछुमन ने 'युवाज़' पत्रिका का विमोचन भी किया जो पिछले वर्ष से विभाग के पूर्व छात्रों द्वारा ऑनलाइन प्रकाशित की जाती है। समापन समारोह का मंच संचालन डॉ. गुदारी तथा डॉ. झमन ने किया।

महात्मा गांधी संस्थान के हिंदी विभाग द्वारा दो पूर्व प्राध्यापकों का सम्मान

श्री कौशलेश रामफल व डॉ. उदय नारायण गंगू सम्मानित

समापन समारोह के इस अवसर पर ही संस्थान के हिंदी विभाग ने अपने ऐसे दो पूर्व वरिष्ठ व्याख्याताओं को सम्मानित किया जिन्होंने इस विभाग की लम्बे समय तक सेवा की है तथा इसके विकास में पूरा योगदान दिया है। सर्वप्रथम सम्मानित हुए डॉ. उदय नारायण गंगू जो संप्रति आर्य सभा मॉरीशस के प्रधान हैं। सम्मानित होनेवाले श्री कौशलेश रामफल विभाग के पूर्व अध्यक्ष भी रह चुके हैं। विभाग से जुड़े होने के अतिरिक्त आप दोनों हिंदी विद्वान भाषा-क्षेत्र में आजीवन निष्ठा, कर्मठता एवं नि:स्वार्थ भाव के लिए पहचाने जाते हैं।

साभार : 'युवाज़' – युवा हिंदी की आवाज़

विजयवाडा में 'समकालीन साहित्य की वैचारिकी' पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

22-23 नवंबर, 2015 को के. बी. एन. कॉलेज के सभाकक्ष में अक्षरा साहिती सांस्कृतिक सेवा पीठम तथा के. बी. एन कॉलेज (स्वायत्त) के संयुक्त तत्वावधान में हिंदी विभाग, आचार्य नागार्जुन विश्वविद्यालय-गुंटूर के सहयोग से 'समकालीन साहित्य की वैचारिकी' पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन समारोह संपन्न हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में प्रमुख आलोचक प्रो. चौथीराम यादव, पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता आर. एस. सर्राजू, हिंदी विभागाध्यक्ष, केंद्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद ने की। विशिष्ट अतिथियों के रूप में आचार्य शशि मुदिराज, पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष, केंद्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद और के. बी. एन. कॉलेज के प्राचार्य डॉ. पी. कृष्णमूर्ती मंच पर उपस्थित थे। मुख्य अतिथि प्रो. चौथीराम यादव ने अपने बीज व्याख्यान में समकालीन साहित्य को उसकी व्यापकता और गहराई में देखने की बात कही तथा उन्होंने समकालीन साहित्य की कालगत और प्रवृत्तिगत रूपों की चर्चा करते हुए इसे आगे की चर्चा के लिए संदर्भ के रूप में रखा। के. बी. एन. कॉलेज के प्राचार्य डॉ. पी. कृष्णमूर्ती ने राष्ट्रभाषा हिंदी सीखने की आवश्यकता के बारे में स्वानुभव से अवगत कराया। प्रो. आर. एस. सर्राजू ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि दक्षिण में हिंदी के प्रचार-प्रसार की ऐतिहासिक अनिवार्यता को देखते हुए सर्वप्रथम आंध्र प्रदेश के राजमहेंद्री में हिंदी प्रचारक प्रशिक्षण महाविद्यालय की स्थापना हुई थी।

संगोष्ठी में आयोजित सत्रों में कथा साहित्य की वैचारिकी, कविता की वैचारिकी तथा अनुवाद साहित्य की वैचारिकी आदि पर प्रपत्र प्रस्तुत किए गए। साथ-साथ अक्षरा द्वारा प्रकाशित 'अमर अक्षरा' हिंदी त्रैमासिकी के प्रवेशांक का लोकार्पण किया गया व अतिथियों का व पत्र प्रस्तुत करने वालों का सम्मान किया गया। अवसर पर श्रीमती जानकी देवी, डॉ. निर्मला, श्री राधाकृष्ण मिरियाला, डॉ. कृष्ण मोहन, तल्ला प्रगडा रवि, विभिन्न राज्यों से पधारे हिंदी प्राध्यापक तथा हिंदी शोधार्थी, छात्र एवं दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, विजयवाडा के प्रचारकगण ने भी भाग लिया।

डॉ. पी. श्रीनिवास राव की रिपोर्ट

दिल्ली में श्री अरविन्द महाविद्यालय में आयोजित संगोष्ठी

18-19 सितंबर, 2015 को दिल्ली विश्वविद्यालय के श्री अरविन्द महाविद्यालय में हिंदी विभाग के युवा प्राध्यापक डॉ. सुधीर प्रताप सिंह के अथक प्रयास से 'वैश्वीकरण और भक्तिकाव्य' विषय पर राष्ट्रीय स्तर पर द्विदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के आरम्भ में महाविद्यालय की 'तालीम' सोसायटी द्वारा कबीर-पद का वाद्ययंत्रों सहित सुमधुर गान हुआ। पद और स्वर-लहरी में श्रोताओं को देखकर सिद्ध हो गया कि भक्ति काव्य आज भी अत्यन्त प्रासंगिक है। संगोष्ठी में भक्तिकाव्य से जुड़े विभिन्न विषयों-राजसत्ता, धर्मसत्ता, अस्मिता और भाषा पर नामवरसिंह, केदारनाथ सिंह, मैनेजर पांडेय, गोपेश्वर सिंह, हरिमोहन शर्मा, नलिन रंजन सिंह, नित्यानंद तिवारी आदि हिंदी विद्वानों ने अपने-अपने अभिभाषणों से श्रोताओं को मंत्र-मुग्ध कर दिया। आज के तकनीकी दौर में, भाग-दौड़ के जीवन में हिंदी के प्राचीन साहित्य पर संगोष्ठी का आयोजन निश्चित ही हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान है।

डॉ. सरिता बख्शी की रिपोर्ट

नई दिल्ली में 'भारतीय भाषा' मंच शुभारंभ एवं संगोष्ठी

20 दिसंबर, 2015 को आज़ाद भवन प्रेक्षागृह, नई दिल्ली में 14 राज्यों से आए 17 भाषाओं के प्रतिनिधियों द्वारा भारतीय भाषा मंच का औपचारिक गठन हुआ। भारतीय भाषाओं की चिंताजनक स्थिति, दशा एवं दिशा पर देश भर में गंभीर चिंतन एवं चर्चा के बाद विभिन्न भाषाओं के विद्वानों- बुद्धिजीवियों की ओर से यह सुझाव आया कि इस क्षेत्र में व्यापक सुधारों को वास्तविक रूप प्रदान करने के समन्वित प्रयास के रूप में भारतीय भाषा मंच का गठन किया जाए। इस मंच के राष्ट्रीय संयोजक श्री वृषभ जैन ने भारतीय भाषाओं की स्थिति एवं मंच की संकल्पना का परिचय देते हुए कहा कि ***" ऐसा कोई मंच नहीं बना जो समस्त भारतीय भाषाओं के सभी पक्षों की चिन्ता करता हो। सभी भारतीय भाषाएँ हमारी राष्ट्रीय भाषाएँ हैं, अखण्ड भारत की एक संस्कृति की भाषाएँ हैं। इन सब को समृद्ध करने के लिए सरकारी और सामाजिक दोनों स्तरों पर काम करने की आवश्यकता है। यह मंच उस रूप में आगे बढ़ने के लिए संकल्पित है तथा यह मंच पूरी तरह स्वायत्त रहेगा।"*** वहीं केरल से पधारे श्री विनोद जी ने सभी लोगों से भाषायी आन्दोलन खड़ा करने की अपील की। कार्यक्रम में पधारे सभी भाषाओं के प्रतिनिधियों ने अपने-अपने विचार भी प्रस्तुत किए।

साभार: वैश्विक हिंदी सम्मेलन, मुम्बई

हिंदी में कृषि साहित्य पर केंद्रित राष्ट्रीय कार्यशाला

9 दिसंबर, 2015 को हैदराबाद के राजेंद्र नगर स्थित राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंध संस्थान के तत्वावधान में 'हिंदी में तकनीकी साहित्य का सृजन और उसका विस्तृत संचार : कृषि साहित्य के विशेष संदर्भ में' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में कृषि साहित्य के अनुवाद, कृषि क्षेत्र में सरकारी योजनाओं, हिंदी में कृषि विषयक ज्ञान की उपलब्धता, सूचना एवं संपर्क तकनीक, किसान पोर्टल और विकासपीडीया पर अत्यंत उपयोगी विचार एवं कार्य सत्र संपन्न हुए। इस अवसर पर प्रो. ऋषभदेव शर्मा ने 'प्रयोजनमूलक हिंदी और अनुवाद : पारिभाषिक शब्दावली' पर वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने कृषि वैज्ञानिकों और राज भाषा कर्मियों से अनुरोध किया कि हिंदी और भारतीय भाषाओं में सरल-सहज शब्दों में मुद्रित माध्यम और इंटरनेट पर अधिकाधिक अद्यतन जानकारी की उपलब्धता सुनिश्चित करें ताकि साधारण किसानों तक उसकी पहुँच हो सके। कार्यशाला डॉ. वी. पी. शर्मा के निर्देशन में तथा डॉ. के. श्रीवल्ली द्वारा संयोजित की गई।

साभार : 'हैदराबाद से' ब्लॉग

मूल्यांकन कवि गोष्ठी

2 नवंबर, 2015 को 'गीत चाँदनी' के तत्वावधान में हैदराबाद के नामपल्ली स्थित हिंदी प्रचार सभा में 'मूल्यांकन' कवि गोष्ठी का आयोजन किया गया। डॉ. दयाकृष्ण गोयल ने गोष्ठी की अध्यक्षता की। गोष्ठी में कवियों और लेखकों ने परमाणु ऊर्जा विभाग की गृह पत्रिका 'खनिज भारती' की समीक्षा की। इस अवसर पर डॉ. प्रेमलता श्रीवास्तव, सुनीता लुल्ला, रत्नकला मिश्रा, शिव कुमार तिवारी, कुँज बिहारी गुप्ता आदि उपस्थित रहे। कवि गोष्ठी का संचालन गोविंद अक्षय ने किया।

साभार: स्वतंत्रवार्ता.कॉम

भोपाल में 'मीडिया की भूमिकाः भाषा सीखना या सिखाना' विषय पर संगोष्ठी

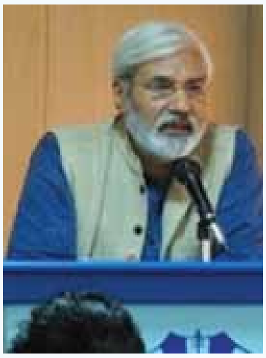

4 नवंबर, 2015 को माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय के पत्रकारिता विभाग द्वारा 'मीडिया की भूमिका : भाषा सीखना या सिखाना' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। देश के वरिष्ठ पत्रकार व गोष्ठी के मुख्य वक्ता राहुल देव ने कहा कि ***''मीडिया के सिखाने की भूमिका, सीखने की भूमिका से ज़्यादा बढ़ी है।''*** उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि ***''अंग्रेज़ी भाषा सीखना ज़रूरी है और यदि ऐसा नहीं होगा तो हम एक ही भाषा में सीमित रहेंगे लेकिन इतना ध्यान रखना होगा कि हिंदी भाषा हमारी ज़मीन है।''*** विश्वविद्यालय के कुल सचिव डॉ. सच्चिदानंद जोशी ने कहा कि ***"समाज से मीडिया की भाषा प्रभावित हो रही है या मीडिया से समाज की भाषा, इस पर विचार करने की ज़रूरत है।"*** इसके अतिरिक्त वरिष्ठ पत्रकार आनंद पांडे ने कहा कि ***"भाषा को ताकत से अधिक लचीलेपन की आवश्यकता है।"*** वरिष्ठ पत्रकार विनोद पुरोहित ने कहा कि ***"भाषा पर अधिकार और स्वाभिमान होना चाहिए और किसी भाषा को सीखने से गुरेज नहीं होना चाहिए।"*** संगोष्ठी में पत्रकारिता विभाग के विद्यार्थियों के साथ विभाग के सभी शिक्षकों ने भी भाग लिया। पत्रकारिता विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. राखी तिवारी ने संगोष्ठी के विषय पर प्रकाश डालते हुए कार्यक्रम का संचालन किया।

साभारः वैश्विक हिंदी सम्मेलन

बर्मिंघम शहर में 'लेखनी सानिध्य' का आयोजन

11 अक्टूबर, 2015 को इंग्लैंड के बर्मिंघम शहर के गीता भवन में श्रीमती शैल अग्रवाल की इ-पत्रिका 'लेखनी' के वार्षिक कार्यक्रम 'लेखनी सानिध्य' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भारतीय महावाणिज्यदूत श्री जे. के. शर्मा रहे। समारोह के अंतर्गत काव्य-गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें ब्रिटेन तथा भारत के अनेक प्रसिद्ध साहित्य-प्रेमी कवियों ने अपनी सुन्दर रचनाओं का पाठ किया। साथ-साथ 'वैश्विक हिंदी सम्मेलन' की समन्वयक और साहित्यकार श्रीमती शील निगम ने उपर्युक्त संस्था की गतिविधियों की जानकारी तथा उद्देश्यों का संक्षिप्त परिचय दिया। इस अवसर पर श्रीमती शील निगम ने 'वैश्विक हिंदी सम्मेलन' की ओर से वरिष्ठ साहित्यकार एवं 'लेखनी' की संपादक श्रीमती शैल अग्रवाल को हिंदी भाषा एवं साहित्य के प्रति महत्वपूर्ण योगदान, हिंदी साहित्य के प्रसार कार्य तथा राष्ट्र भाषा हिंदी के प्रति उनकी निष्ठा के लिए 'वैश्विक हिंदी साहित्य-सारथि सम्मान' से विभूषित करने के निर्णय की घोषणा की। कार्यक्रम में ब्रिटेन के गणमान्य साहित्य-प्रेमी उपस्थित थे।

साभार : वैश्विक हिंदी सम्मेलन, मुम्बई

'नई सदी के हिंदी साहित्य की बदलती प्रवृत्तियाँ' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

10 अक्टूबर, 2015 को विजयपुर के अंजुमन कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा 'नई सदी के हिंदी साहित्य की बदलती प्रवृत्तियाँ' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। उद्‌घाटन समारोह की अध्यक्षता अंजुमन कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. ए. डी. नवलगुंद ने की। इस अवसर पर जनाब सैय्यद महबूब कादरी 'मुश्रीफ़' और हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. एम. ए. पीरा मंचासीन थे। संगोष्ठी को दो सत्रों में विभाजित किया गया था। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा से पधारे प्रो. देवराज ने संगोष्ठी का उद्‌घाटन किया तथा अपने बीज भाषण में कहा कि ''21वीं सदी के साहित्य की बदलती प्रवृत्तियों को जानने के लिए भारतेंदु, महावीर प्रसाद द्विवेदी, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद आदि की गहन जानकारी अनिवार्य है।''

प्रथम सत्र में 'नई सदी के हिंदी उपन्यास साहित्य' पर अपने विस्तृत शोधपत्र में अंग्रेज़ी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय हैदराबाद के पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. एम. वेंकटेश्वर ने वैश्विक संदर्भ में चर्चा करते हुए कहा कि ''उपन्यास अपने समय से सार्थक संवाद करता है तथा अनुभव उपन्यास की रीढ़ है।'' 'नई सदी के हिंदी साहित्य में आदिवासी विमर्श' पर अपना मत व्यक्त करते हुए केंद्रीय विश्वविद्यालय, गुलबर्गा की हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. सुनीता मंजनबैल ने कहा कि ''आदिवासी साहित्य प्रतिरोधी साहित्य है। उसके स्वर में पीड़ा, असंतोष और आक्रोश है।'' साथ ही, मुंबई विश्वविद्यालय से पधारे डॉ. दत्तात्रेय मुरुमकर ने 'नई सदी के हिंदी कहानी साहित्य की बदलती प्रवृत्तियाँ' पर विचार व्यक्त किए।

द्वितीय सत्र में आत्मकथाओं पर चर्चा करते हुए हैदराबाद की लेखिका डॉ. पूर्णिमा शर्मा ने मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथा 'कस्तूरी कुंडल बसे' और 'गुड़िया भीतर गुड़िया' तथा तुलसीदास कृत 'मुर्दहिया' और 'मणिकर्णिका' का सोदाहरण विवेचन किया तथा कुवेंपु विश्वविद्यालय, शिमोगा की हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. उमा हैगडे ने 'नई सदी के हिंदी नाटक साहित्य की बदलती प्रवृत्तियाँ' पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम का संचालन प्रो. ए. एम. सिद्दीकी ने किया। इस अवसर पर बीजापुर के अतिरिक्त देश के विभिन्न प्रांतों से पधारे विद्वान, शोधार्थी और छात्र बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

साभारः 'हैदराबाद से' ब्लॉग

वाल्मीकि साहित्य पुरस्कार व कवि सम्मेलन

3 नवंबर, 2015 को 'गीत चाँदनी' के तत्वावधान में हैदराबाद के गांधी दर्शन मण्डप, नुमाइश मैदान में आदिकवि वाल्मीकि साहित्य संस्था के पुरस्कार समारोह एवं भव्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। प्रो.जयकिशन तथा डॉ. दयाकृष्ण गोयल ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस अवसर पर सुप्रसिद्ध गीतकार डॉ. माया सिंह माया ने नगर के कवि पुरुषोतम कडेल को 'आदिकवि वाल्मीकि साहित्य पुरस्कार 2015' प्रदान कर सम्मानित किया। कार्यक्रम में अनेक कवियों ने काव्यपाठ किया तथा संस्था के संस्थापक दीपक चिण्डालिया वाल्मीकि ने संस्था के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। गीत चाँदनी के संयोजक गोविंद अक्षय ने कार्यक्रम का संचालन किया।

साभारः स्वतंत्रवार्ता.कॉम

श्रीमती आशा शर्मा के काव्य संग्रह 'अनकहे स्वप्न' का लोकार्पण

22 नवंबर, 2015 को बीकानेर के वेटेनरी ऑडीटोरियम में साहित्य-संस्कृति कला संगम एवं बीकाणा आई.टी आई. कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में कवयित्री श्रीमती आशा शर्मा की प्रथम काव्य कृति 'अनकहे स्वप्न' का लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं व्यंग्य चित्रकार श्री किशोर श्रीवास्तव रहे। उन्होंने 'अनकहे स्वप्न' को जीवन के विविध रंगों से सराबोर कविताओं में नारी की सशक्त अभिव्यक्ति का बेहतरीन चित्रण बताया। साथ-साथ विशिष्ट अतिथि कवि कथाकार श्री कमल रंगा ने आशा शर्मा की कविताओं को पारिवारिक एवं आत्मीय भाव से ओतप्रोत बताया। समारोह की अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ साहित्यकार श्री भवानी शंकर व्यास ने कहा कि आशा शर्मा की कविताओं में चुनौतियों से जूझने का जज़्बा है। कवयित्री आशा शर्मा ने अपनी अनेक रचनाओं का पाठ किया। मंच संचालन श्री संजय पुरोहित ने किया।

श्रीमती आशा शर्मा की रिपोर्ट

मंगल अभियान पर पहली हिंदी एटलस पुस्तक का विमोचन

26 अक्टूबर, 2015 को नई दिल्ली में अंतरिक्ष और परमाणु ऊर्जा विभाग की गठित 'संयुक्त हिंदी सलाहकार समिति' की पहली बैठक के अवसर पर केंद्रीय पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार), प्रधान मंत्री कार्यालय, कार्मिक, लोक शिकायत, पेंशन, परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष राज्यमंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह द्वारा 'मंगल उपग्रह अभियान (मॉम)' पर हिंदी भाषा में पहली एटलस पुस्तक का विमोचन किया गया। डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि आनेवाले समय में जैसे देश की अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी और परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम विश्व के अन्य हिस्सों के वैज्ञानिक अनुसंधानकर्ताओं का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते हैं वैसे ही देश के हिंदी भाषी वैज्ञानिक विदेशी वैज्ञानिकों के लिए भी प्रेरणा बनेंगे और वे हिंदी भाषी वैज्ञानिकों के साथ सरल संवाद के लिए हिंदी अपनाएँगे तथा अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी और परमाणु ऊर्जा जैसे वैज्ञानिक विभागों में शिक्षा के माध्यम के रूप में हिंदी को बढ़ावा देने से देश में वैज्ञानिक सोच वाले ऐसे बेहतर युवा भी उपलब्ध होंगे जो अंग्रेज़ी भाषा का ज्ञान नहीं होने पर भी अपनी प्रतिभा का योगदान दे सकते हैं। इस अवसर पर अंतरिक्ष विभाग के सचिव और अंतरिक्ष आयोग तथा भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के अध्यक्ष श्री ए. एस किरण कुमार और परमाणु ऊर्जा विभाग के सचिव तथा परमाणु ऊर्जा आयोग के अध्यक्ष डॉ. शेखर बसु एवं दोनों विभागों के वरिष्ठ वैज्ञानिक तथा हिंदी के जाने-माने विद्वान उपस्थित थे।

साभार : पत्र सूचना कार्यालय, भारत सरकार का वेबसाइट

प्रो. ऋषभदेव शर्मा की पुस्तकों का लोकार्पण

12 अक्टूबर, 2015 को खैरताबाद स्थित दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के सम्मेलन कक्ष में साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्था 'साहित्य मंथन' के तत्वावधान में प्रो. ऋषभदेव शर्मा के ग्रंथ 'हिंदी भाषा के बढ़ते कदम', प्रो. शर्मा और डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा द्वारा संपादित पुस्तक 'उत्तर आधुनिकता : साहित्य और मीडिया' व उत्तर प्रदेश के युवा समीक्षक डॉ. विजेंद्र प्रताप सिंह कृत 'ऋषभदेव शर्मा का कविकर्म' का लोकार्पण किया गया। लोकार्पण 'भास्कर भारत' के संपादक डॉ. राधेश्याम शुक्ल, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा से पधारे प्रो. देवराज तथा 'पुष्पक' की प्रधान संपादक तथा कादंबिनी क्लब और आथर्स गिल्ड ऑव इंडिया, हैदराबाद की संयोजिका डॉ. अहिल्या मिश्र द्वारा किया गया।

समारोह का संचालन डॉ. बी. बालाजी ने किया। तेलंगाना और आंध्र प्रदेश के शताधिक हिंदी प्रेमियों ने अपनी उपस्थिति से समारोह को भव्य बनाया।

साभार: 'हैदराबाद से' ब्लॉग

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की नई पत्रिका 'ताना-बाना' का लोकार्पण

26 अक्टूबर, 2015 को हबीब तनवीर सभागार में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय द्वारा कला व संस्कृति पर केंद्रित नई पत्रिका 'ताना-बाना' का लोकार्पण कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र की अध्यक्षता में भोपाल से आए वरिष्ठ कवि ध्रुव शुक्ल ने किया। विश्वविद्यालय में आयोजित लोकार्पण समारोह में कुलसचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र, पत्रिका के संपादक राकेश श्रीमाल, प्रो. के. के. सिंह तथा युवा कथाकार राकेश मिश्रा सहित अनेक महानुभाव, विद्वान, हिंदी प्रेमी और छात्र उपस्थित थे।

साभार : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस में पुरस्कार वितरण समारोह एवं 'वसंत चयनिका-भाग 2' और 'वसंत' का लोकार्पण

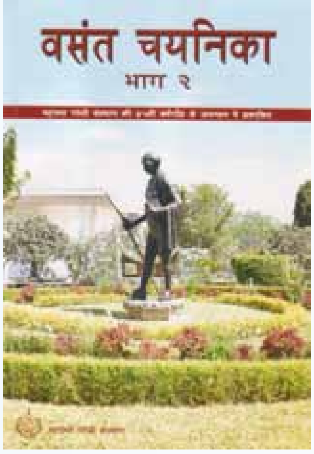

9 दिसंबर, 2015 को, मॉरीशस स्थित महात्मा गांधी संस्थान के सृजनात्मक लेखन एवं प्रकाशन विभाग द्वारा संस्थान के सुब्रमण्यम भारती सभागार में विभाग द्वारा वार्षिक रूप से आयोजित सृजनात्मक लेखन प्रतियोगिता के संदर्भ में पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। 2015 का यह कार्यक्रम विशेष रहा क्योंकि समारोह के अंतर्गत ही महात्मा गांधी संस्थान की 45वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में 'वसंत चयनिका-भाग 2' और सृजनात्मक लेखन एवं प्रकाशन विभाग की स्थापना की 40वीं वर्षगाँठ के संदर्भ में, विभाग के प्रथम संपादक तथा मॉरीशस के मूर्धन्य लेखक श्री अभिमन्यु अनत पर संस्थान की 'वसंत' पत्रिका के विशेषांक का लोकार्पण भी किया गया।

समारोह के मुख्य अतिथि, विश्व हिंदी सचिवालय के कार्यवाहक महासचिव, श्री गंगाधरसिंह सुखलाल सहित इस अवसर के लिए विद्यार्थियों द्वारा फूलों, गुब्बारों और रंग-बिरंगे कपड़ों से सजाए गए सभागार के उत्साहपूर्ण वातावरण में संस्थान की निदेशिका डॉ. विद्योत्मा कुंजल, कुलसचिव श्रीमती उमा कौलेसर, कोषाध्यक्ष श्री मोता, भारतीय अध्ययन संकाय के अध्यक्ष डॉ. केसवेन सोर्नम विशिष्ट रूप से मंचासीन थे। मॉरीशस भर के प्राथमिक एवं माध्यमिक स्कूलों के हिंदी शिक्षक, मुख्य अध्यापक, विद्यार्थी, अभिभावक, पत्रिका के प्रयोजक तथा हिंदी के गणमान्य विद्वान भी भारी संख्या में समारोह में उपस्थित हुए।

मुख्य अतिथि ने देश और समाज के बौद्धिक स्वास्थ्य और तेज़ी से रोज़गारोन्मुख विषयों की तरफ़ झुकती हुई प्रणाली में संतुलन बनाए रखने के लिए भाषा अध्ययन और साहित्य सृजन की अनिवार्यता पर बल देते हुए बाल-लेखकों एवं युवकों से साहित्य की अलग-अलग विधाओं में, लगन और साहस के साथ अपनी लेखनी चलाने की अपील की। उन्होंने मॉरीशस की प्रमुख साहित्यिक पत्रिका के रूप में 'वसंत' के महत्व को उजागर करते हुए इस तथ्य को रेखांकित किया कि 'वसंत चयनिका' इस पत्रिका में पिछले दो दशकों में छपी ऐसी रचनाओं का सार्थक संकलन है जो कालांतर में मॉरीशसीय साहित्य के एक युग की परिचायक सिद्ध होंगी जबकि पत्रिका के श्री अभिमन्यु अनत विशेषांक से अनत जी के रचनात्मक-कर्म का बेहतर परिचय प्राप्त होगा।

मुख्य अतिथि तथा अन्य महानुभावों द्वारा दोनों रचनाओं के लोकार्पण के समय सभागार में उपस्थित साहित्य प्रेमियों के उत्साह के द्वारा सृजनात्मक लेखन विभागाध्यक्षा डॉ. माधुरी रामधारी सहित संपादक मंडल और संस्थान के प्रति असीम साधुवाद प्रतिध्वनित हुआ।

लोकार्पण से पूर्व महात्मा गांधी संस्थान की निदेशिका डॉ. श्रीमती विद्योत्मा कुंजल ने 'वसंत' और 'रिमझिम' की गतिविधियों में गहरी रुचि दिखाने के लिए अतिथियों और विशेषकर विद्यार्थियों का धन्यवाद किया और साहित्यिक प्रतियोगिताओं के विजेताओं को बधाई दी। 'वसंत चयनिका भाग 2' के विमोचन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि 'वसंत चयनिका' का प्रकाशन 1993 में हुआ था, जो 'वसंत' के प्रारंभिक 76 अंकों से चुनी गई रचनाओं का संग्रह बना। इसी संग्रह का दूसरा भाग 'वसंत चयनिका ' भाग 2', 1993 से 2015 तक प्रकाशित 'वसंत' के 59 अंकों से चयनित रचनाओं का संकलन है जो मॉरीशसीय हिंदी साहित्य की नवीन पहचान कराने जा रहा है। श्री अभिमन्यु अनत पर 'वसंत' के विशेषांक के प्रकाशन के संदर्भ में, निदेशिका ने उल्लेख किया कि अनत जी ने 22 वर्षों तक सृजनात्मक लेखन विभाग के अध्यक्ष के रूप में महात्मा गांधी संस्थान को अपनी सेवा प्रदान की और आधी शताब्दी से अधिक उन्होंने मॉरीशसीय हिंदी साहित्य की वृद्धि की। 'वसंत' पत्रिका का विशेषांक श्री अभिमन्यु अनत जी के जीवन, व्यक्तित्व और कृतित्व के कुछ अनकहे पहलुओं को उजागर करने में विशिष्ट भूमिका निभाएगा।

आरंभ में सृजनात्मक लेखन एवं प्रकाशन विभाग की अध्यक्षा डॉ. माधुरी रामधारी ने स्वागत-भाषण में बताया कि प्रतिवर्ष साहित्य एवं सर्जना की त्रैमासिक पत्रिका 'वसंत' और बाल पत्रिका 'रिमझिम' में आयोजित साहित्यिक प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत करने और लेखकों तथा सहयोगियों को सम्मानित करने के उद्देश्य से पुरस्कार-वितरण-समारोह का आयोजन किया जाता है। उन्होंने इन प्रतियोगिताओं के आयोजन और कृतियों के संपादन में सहयोग प्रदान करनेवालों के प्रति आभार प्रकट किया।

समारोह में छात्र विरेश अमरिथ, ज्योति गुरझन तथा निवेदिता बालक ने डॉ. स्वनामधन्य मॉरीशसीय कवि हेमराज सुन्दर द्वारा रचित 'महात्मा गांधी संस्थान, हमारी पहचान' गीत की प्रस्तुति की। संस्थान के इतिहास और उद्देश्यों पर आधारित इस गीत ने श्रोताओं को हर्षित कर दिया। प्राथमिक, माध्यमिक और विश्वविद्यालयीय स्तर के विद्यार्थियों ने 'रिमझिम' एवं 'वसंत' में प्रकाशित अपनी कविता, कहानी और निबंध की कलापूर्ण प्रस्तुति की।

पुरस्कार वितरण सत्र के दौरान 2015 की प्रत्येक साहित्यिक प्रतियोगिता के प्रथम और द्वितीय स्थान-प्राप्त विजेताओं को संस्थान की ओर से शील्ड और प्रमाण-पत्र तथा भारतीय उच्चायोग और हिंदी साहित्य अकादमी की ओर से पुस्तकें प्रदान की गईं।

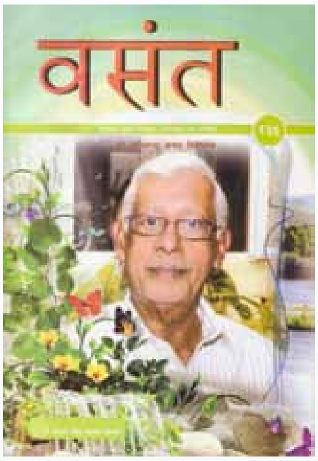

उल्लेखनीय है कि संस्थान के सृजनात्मक लेखन विभाग द्वारा प्रश्नोत्तरी, निबंध-लेखन, कविता-लेखन, कहानी-लेखन, निबंध-लेखन आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था जिसमें देश भर की शैक्षणिक संस्थाओं के छात्रों और स्थापित व नवोदित लेखकों ने उत्साह के साथ भाग लिया था। इन प्रतियोगिताओं के अतिरिक्त संस्थान की 'वसंत' और 'रिमझिम' पत्रिकाओं के लिए निरंतर लेखन करनेवालों को भी तीन वर्गों में विभाजित करके सम्मानित किया गया। नवोदित लेखकों में जहाँ पाँचवीं कक्षा की छात्रा उपासना देवी मोहेश और माध्यमिक पाठशाला के लेखराज हर्भुकन सम्मानित हुए वहीं सुश्री अंजलि चिंतामणु और श्री केसन बधू को सन् 2015 के सर्वाधिक सक्रिय लेखक के रूप में प्रोत्साहित किया गया। इनके अतिरिक्त स्थापित लेखकों में श्री नारायणपत दसोई तथा श्री लोकप्रकाश हीरू सम्मानित हुए। 'वसंत' और 'रिमझिम' पत्रिकाओं के पाठकों की संख्या बढ़ाने तथा इनके प्रचार में विशेष योगदान के लिए चार हिंदी शिक्षक श्री सत्यानंद फ़ाकू, कुमारी आरती लोचन, श्री ज्ञानेश्वर कल्लू तथा श्रीमती शान्ति सोलिक महावीर सम्मानित हुए।

समारोह के अंत में डॉ. माधुरी रामधारी ने सक्रिय भागीदारी के लिए विद्यार्थियों, स्कूलों के प्रतिनिधियों तथा अभिभावकों के प्रति आभार प्रकट किया।

डॉ. माधुरी रामधारी की रिपोर्ट

पवित्रा अग्रवाल का लघुकथा संग्रह 'आँगन से राजपथ' का लोकार्पण

12 दिसंबर, 2015 को हैदराबाद के नरेंद्र भवन में साहित्य गरिमा पुरस्कार समिति एवं ऑथर्स गिल्ड ऑफ़ इण्डिया के संयुक्त तत्वावधान में 7वाँ साहित्य गरिमा पुरस्कार 2014 एवं लोकार्पण समारोह का आयोजन किया गया। श्री मुनींद्र जी मुख्य अतिथि के रूप में तथा श्रीमती लक्ष्मी नारायण अग्रवाल विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री नरेंद्र परिहार ने किया। समारोह के अंतर्गत प्रमुख हिंदी कथाकार पवित्रा अग्रवाल की पाँचवीं कथा-पुस्तक 'आँगन से राजपथ' का लोकार्पण ऑथर्स गिल्ड ऑफ़ इण्डिया के महासचिव डॉ. शिव शंकर अवस्थी द्वारा किया गया। अवसर पर दक्षिण भारत में हिंदी में सृजनात्मक लेखन के लिए चयनित महिला रचनाकार तिरुवनंतपुरम की लेखिका डॉ. सी. जे. प्रसन्नकुमारी को कथेतर विधा के अंतर्गत उनके यात्रावृत्त 'भारतीय अभियंताओं का स्वप्नलोक' के लिए '7वाँ साहित्य गरिमा पुरस्कार 2014' प्रदान किया गया। समारोह का संचालन मीना मुथा ने किया।

साभार : 'हैदराबाद से' ब्लॉग

गोइन्का पुरस्कार एवं सम्मान समारोह

5 दिसंबर, 2015 को केरल के तिरुवनन्तपुरम प्रेस क्लब के सभागृह में कमला गोइन्का फाउण्डेशन एवं हिंदी विद्यापीठ के संयुक्त तत्वावधान में वरिष्ठ अहिंदी भाषी साहित्यकारों के सम्मानार्थ घोषित 'बालकृष्ण गोइन्का हिंदी साहित्य सम्मान' से वरिष्ठ हिंदी साहित्यकार डॉ. एन. चन्द्रशेखरन नायर को सम्मानित किया गया एवं केरल के सिरमौर फ़िल्म अभिनेता, हिंदी-प्रेमी पद्मश्री डॉ. माधवन नायर को 'दक्षिण ध्वजधारी सम्मान' से विभूषित किया गया। साथ-साथ इस वर्ष अहिंदी भाषी साहित्यकार द्वारा अनूदित हिंदी साहित्य के लिए कन्नूर के निवासी डॉ. प्रभाकरन हेब्बार इल्लत को 'बालकृष्ण गोइन्का अनूदित साहित्य पुरस्कार' प्रदान किया गया। उनको यह पुरस्कार स्वनामधन्य मलयालम लेखिका सुधीरा के प्रख्यात उपन्यास 'गंगा' के अनुसृजन के लिए दिया गया। कमला गोइन्का फाउण्डेशन के प्रबंध न्यासी श्री श्यामसुन्दर गोइन्का ने पुरस्कृत साहित्यकारों को हिंदी साहित्य के क्षेत्र में योगदान के लिए सराहा व संस्था का परिचय दिया तथा समारोह के अध्यक्ष पद्मश्री डॉ. वल्लायणि अर्जुनन ने कमला गोइन्का फाउण्डेशन द्वारा हिंदी साहित्य के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों की सराहना की। डॉ. चन्द्रशेखरन नायर, डॉ. माधवन तथा डॉ. प्रभाकरन ने सम्मान के लिए कमला गोइन्का फाउण्डेशन का धन्यवाद किया। इस अवसर पर केरल पुरस्कार संयोजक समिति सदस्य डॉ. सुरेन्द्रन आरसू, डॉ. विनयचन्द्रन, प्रो. तंकमणि अम्मा, डॉ. प्रसन्नाकुमारी एवं डॉ. शांति सहित अनेक हिंदी साहित्य रसिक उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन सुश्री रंजीतारानी ने किया। अंत में डॉ. विश्वम ने आभार व्यक्त किया।

साभार : कमला गोइन्का फाउण्डेशन

गोइन्का राजस्थानी साहित्य पुरस्कार 2015 व कवि सम्मेलन

4 अक्टूबर, 2015 को जयपुर के विद्याश्रम स्कूल के महाराणा प्रताप सभागार में वर्ष 2015 का 'मातुश्री कमला गोइन्का राजस्थानी पुरस्कार' समारोह व कवि सम्मेलन संपन्न हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में राजस्थान सरकार के चिकित्सा मंत्री राजेंद्र राठौड़ उपस्थित थे तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता नंद भारद्वाज द्वारा की गई। समारोह में वयोवृद्ध राजस्थानी साहित्यकार श्री सीताराम महर्षि को 'गोइन्का राजस्थानी साहित्य सारस्वत सम्मान', डॉ. भरत ओला को 'मातुश्री कमला गोइन्का राजस्थानी साहित्य पुरस्कार 2015', श्रीमती कमला 'कमलेश' को 'राणी लक्ष्मीकुमारी चुण्डावत महिला साहित्यकार पुरस्कार 2015', सुरसाधक उमराव सालोदिया को 'राजस्थान अनमोल रत्न सम्मान', राजस्थानी त्रैमासिक शोध-पत्रिका 'वरदा' के संपादक एवं वरिष्ठ पत्रकार उदयवीर शर्मा को 'रावत सारस्वत पत्रकारिता सम्मान' तथा अनुश्री राठौड़ को 'किशोर कल्पनाकांत युवा साहित्यकार पुरस्कार' से विभूषित किया गया। समारोह के अंतर्गत भव्य कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ जिसमें हरीश, रमेश शर्मा, कैलाश मंडेला, केशरदेव मारवाड़ी एवं श्याम 'हमराही' आदि कवियों ने अपनी रचनाओं से उपस्थित सभी श्रोताओं को लुभाया। कार्यक्रम का संचालन हरीश हिन्दुस्तानी ने किया।

साभार : खबरएक्सप्रेस.कॉम

हिंदी विश्वविद्यालय में हिंदी पखवाड़ा का पुरस्कार वितरण समारोह

01 अक्टूबर, 2015 को हबीब तनवीर सभागार में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय द्वारा हिंदी पखवाड़े के पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र, प्रतिकुलपति प्रो. चित्तरंजन मिश्र, कुलसचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र मंचासीन थे। विभिन्न प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत प्रतिभागियों को कुलपति, प्रतिकुलपति तथा कुलसचिव द्वारा पुरस्कृत किया गया। कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि ***" हिंदी देश की प्राण-नाड़ी है। हमें हिंदी को विचार की भाषा बनाकर उसका ज्ञान, विज्ञान और प्रौद्योगिकी में उपयोग करना चाहिए। "*** जबकि प्रतिकुलपति प्रो. चित्तरंजन मिश्र ने कहा कि ***" हिंदी संकल्प और प्रेरणा का विषय है जिसे व्यापक फलक पर विस्तारित करने के लिए हमें औपनिवेशिक मानसिकता से बाहर आना होगा।"*** समारोह के अंत में मधुमिता ओझा और नटराज वर्मा ने काव्यपाठ किया। इस अवसर पर शिक्षा विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. अरबिंद कुमार झा, प्रो. के.के. सिंह सहित अध्यापक, अधिकारी एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. राकेश मिश्र तथा धन्यवाद ज्ञापन कुलसचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र ने किया।

बी.एस. मिरगे की रिपोर्ट

हिंदीतर भाषी हिंदी सेवी सम्मान समारोह

2 अक्टूबर, 2015 को मध्य प्रदेश राष्ट्र भाषा प्रचार समिति के हिंदी भवन में 'हिंदीतर भाषी हिंदी सेवी सम्मान' समारोह का आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि विधान सभा के अध्यक्ष डॉ. सीतासरन शर्मा थे। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि ***''हिंदी भाषा को शासकीय एवं प्रशासकीय स्तर पर और अधिक प्रोत्साहन मिलना चाहिए। राष्ट्रीय एकता और अखंडता के लिए हिंदी भाषा का अविस्मरणीय योगदान हमेशा से रहा है और रहेगा।"*** साथ-साथ उन्होंने हिंदीतर-भाषी हिंदी सेवियों को सम्मानित व पुरस्कृत भी किया। इस अवसर पर राष्ट्र भाषा प्रचार समिति के पदाधिकारीगण एवं हिंदी भाषा प्रेमी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

साभार : पत्रिका.कॉम

रामनाथ गोयनका पुरस्कार 2013-2014

23 नवंबर, 2015 को नई दिल्ली के आईटीसी मौर्या होटल में पत्रकारिता के क्षेत्र में उत्कृष्ट काम करने के लिए दिया जानेवाला 'रामनाथ गोयनका एक्सीलेंस इन जर्नलिज़्म' समारोह का आयोजन किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि वित्त और सूचना प्रसारण मंत्री अरुण जेटली थे। समारोह में कुल 57 पत्रकारों को 2013-2014 के लिए पुरस्कृत किया गया जिसमें सरोकारी पत्रकारिता करने के लिए मशहूर 'तहलका' को तीन पुरस्कार मिले। 2013 का 'सर्वश्रेष्ठ हिंदी पत्रकारिता-प्रिंट श्रेणी' राहुल कोटियाल और अतुल चौरसिया को 'तहलका हिंदी' के 31 मई, 2013 अंक में 'हत्याग्रही गांधी' के लिए, 2014 का 'सर्वश्रेष्ठ हिंदी पत्रकारिता-प्रिंट श्रेणी' बृजेश सिंह की रिपोर्ट 'क्यों छोड़े कोई आतंकवाद' 'तहलका हिंदी' के 15 अप्रैल, 2014 अंक के लिए तथा 'सर्वश्रेष्ठ अंग्रेज़ी पत्रकारिता-प्रिंट' (2013) श्रेणी में 'तहलका' के ही रियाज़ वानी को पुरस्कृत किया गया। 'तहलका हिंदी' को लगातार 5वें वर्ष के लिए 'सर्वश्रेष्ठ हिंदी पत्रकारिता-प्रिंट' का 'रामनाथ गोयनका पुरस्कार' मिला है। समारोह में अभिनेता-निर्देशक आमिर खान, कांग्रेस नेता शशि थरूर, जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्य मंत्री फारूख अब्दुल्ला, पूर्व वित्त मंत्री पी. चिदंबरम, भाजपा नेता राजीव प्रताप रूडी और भाजपा सांसद मनोज तिवारी शामिल थे।

साभार: तहलकाहिंदी.कॉम

बैंक ऑव बड़ौदा द्वारा प्रसून जोशी को 'महाराजा सयाजीराव भाषा सम्मान'

27 अक्टूबर, 2015 को मुंबई के कॉर्पोरेट कार्यालय में बैंक ऑव बड़ौदा द्वारा आयोजित समारोह में प्रख्यात कवि, गीतकार एवं विज्ञापन गुरु श्री प्रसून जोशी को बैंक के संस्थापक महाराजा सर सयाजीराव गायकवाड़ की स्मृति में 'महाराजा सयाजीराव भाषा सम्मान' प्रदान किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री पी. एस. जयकुमार ने की। कार्यक्रम के अंतर्गत श्री प्रसून जोशी ने अपनी कविताओं, गीतों तथा रोचक संस्मरणों से श्रोताओं को अभिभूत कर दिया। श्री जोशी ने अपने संबोधन में बैंक ऑव बड़ौदा का धन्यवाद करते हुए कहा कि भाषा केवल भाषा नहीं होती वरन संस्कृति की परिचायक होती है। समारोह में मुंबई की एस. एन. टी. महिला विश्वविद्यालय की एम.ए. हिंदी की दो छात्राओं को भी सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का समन्वयन व संचालन डॉ. जवाहर कर्नावट तथा धन्यवाद ज्ञापन श्री के. बी. गुप्ता ने किया।

डॉ. जवाहर कर्नावट की रिपोर्ट

कृष्ण कुमार यादव को सम्मान

4 नवंबर, 2015 को हनुमानगढ़ के प्रधान डाकघर में राजस्थान साहित्य परिषद के संस्थापक एवं अध्यक्ष श्री दीनदयाल शर्मा तथा वरिष्ठ बाल साहित्यकार और सचिव श्री राजेंद्र ढाल ने डाक सेवाओं के निदेशक एवं साहित्यकार व लेखक श्री कृष्ण कुमार यादव को प्रशासन के साथ-साथ हिंदी साहित्य और ब्लॉगिंग के क्षेत्र में भी अपनी उल्लेखनीय सेवाओं के लिए सम्मानित किया। श्री शर्मा ने कहा कि श्री कृष्ण कुमार यादव का हनुमानगढ़ में आगमन सिर्फ एक अधिकारी के रूप में ही नहीं बल्कि साहित्यकार, लेखक और ब्लॉगर के रूप में भी हुआ है और उनके कृतित्व से सभी अभिभूत हैं। समारोह में हनुमानगढ़ के दून महाविद्यालय के प्राचार्य श्री लक्ष्मीनारायण कस्वां, श्री गंगानगर मंडल के डाक अधीक्षक श्री भारत लाल मीणा तथा अन्य अधिकारीगण और साहित्यकार उपस्थित रहे।

श्री कृष्ण कुमार यादव की रिपोर्ट

न्यू ज़ीलैंड की कंपनी ला रही है हिंदी वेबसाइट

वरिष्ठ पत्रकार अर्जुन देशप्रेमी ने अपनी नई पारी न्यू ज़ीलैंड की कंपनी FROCCA लिमिटेड के साथ प्रबंध संपादक के रूप में शुरू की है। यह कंपनी हिंदी में कई विधाओं पर वेबसाइट लॉन्च करने की तैयारी में है। फिलहाल कंपनी एक एंटरटेनमेंट साइट शुरू कर रही है। कंपनी ने अपना संपादकीय कार्यालय गाज़ियाबाद में कौशांबी स्थित एंजेल मेगा मॉल में खोला है।

करीब 30 वर्षों से पत्रकारिता से जुड़े अर्जुन देशप्रेमी ने मुख्य रूप से 'दैनिक जागरण' को अपना योगदान दिया है। आप नई दिल्ली स्थित कार्यालय में संवाददाता के रूप में कार्यरत रहे। दिल्ली विश्वविद्यालय में पिछले 16 वर्षों से आप हिंदी पत्रकारिता पढ़ा रहे हैं। ए.डी.एस. मीडिया प्राइवेट लिमिटेड की वेबसाइट के संपादक रहे अर्जुन देशप्रेमी ने अब अपनी नई पारी FROCCA लिमिटेड के साथ शुरू की है।

साभार : हिंदीमीडिया.इन

डॉ. सी.जे. प्रसन्नकुमारी को 'सातवाँ साहित्य गरिमा पुरस्कार'

11-12 दिसंबर, 2015 को नरेंद्र भवन के मंच पर 'साहित्य गरिमा पुरस्कार 2014' समर्पण समारोह आयोजित किया गया। मुख्यत: दक्षिण भारत में हिंदी में सृजनात्मक लेखन के लिए चयनित महिला रचनाकार को दिया जानेवाला यह पुरस्कार इस वर्ष तिरुवनंतपुरम वासी लेखिका डॉ. सी.जे. प्रसन्नकुमारी को कथेतर विद्या वर्ग के अंतर्गत उनके यात्रावृत्त ''भारतीय अभियंताओं का स्वप्नलोक'' के लिए मुख्य अतिथि श्री मुनींद्र के हाथों प्रदान किया गया।

साभार : 'हैदराबाद से' ब्लॉग

श्रद्धांजलि

वरिष्ठ साहित्यसेवी डॉ. नरेश पाण्डे 'चकोर'

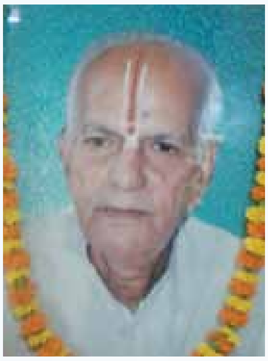

अंगिका भाषा साहित्य के 'महावीर प्रसाद द्विवेदी' कहे जानेवाले, अंगिका और हिंदी भाषा के वरिष्ठ कवि व साहित्यकार डॉ. नरेश पाण्डे 'चकोर' का 14 नवंबर, 2015 को 78 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपका पूरा जीवन अंगिका और हिंदी साहित्य की सेवा में गुज़रा। आपका जन्म 3 जनवरी, 1938 को भागलपुर के देवधा गाँव में हुआ। आपकी प्रारंभिक शिक्षा गाँव और आसपास के स्कूलों में जबकि उच्च शिक्षा भागलपुर विश्वविद्यालय के टी.एन.बी. कॉलेज में हुई। आप लगातार 46 वर्षों तक अंगिका भाषा की मासिक पत्रिका 'अंग माधुरी' का प्रकाशन व संपादन करनेवाले संपादक, अंगिका भाषा के अन्यतम सेवक और समय से कहीं आगे चलनेवाले भाषाविद और साहित्यकार थे। कद और चमक में हर उपमा, उपाधि, अलंकरण से ऊपर, आपको अंगिका का भारतेंदु हरिश्चंद्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, तुलसी, शेक्सपीयर, कालिदास आदि नामों से भी पुकारा गया। 1961 में आधुनिक अंगिका भाषा की पहली प्रकाशित पुस्तक डॉ. चकोर कृत 'किसान के जगाब' साहित्य जगत के सामने आयी थी। 1963 में आपकी एक और पुस्तक 'सर्वोदय समाज' प्रकाशित हुई। पूरे जीवन काल में आपने अंगिका व हिंदी की 71 किताबें लिखीं जिसमें आपके द्वारा संपादित आठ पुस्तकें भी शामिल हैं। आप एक सर्वोच्च कोटि के संगठक तथा आंदोलनधर्मी थे। आप अंगिका व हिंदी के विकास के लिए जीवनपर्यंत कार्य करते रहे।

साभार : प्रभात खबर.कॉम

प्रसिद्ध लेखक, विचारक और चिंतक डॉ. महीप सिंह

24 नवंबर, 2015 को सुप्रसिद्ध लेखक, साहित्यकार, स्तंभकार, विचारक और पत्रकार डॉ. महीप सिंह का 86 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आपका जन्म 15 अगस्त, 1930 को उत्तर प्रदेश के उन्नाव ज़िले के एक गाँव में हुआ था। आपने 1954 में कानपुर के डी.ए.वी. कॉलेज से हिंदी में एम.ए. की उपाधि हासिल की और 1963 में आगरा विश्वविद्यालय से 'गुरु गोविंद सिंह और उनकी हिंदी कविताएँ' विषय पर पीएचडी की थी। आप दिल्ली विश्वविद्यालय में हिंदी के प्रोफ़ेसर रहे और देश-विदेश में भी आपने अध्यापन कार्य किया। 60 के दशक में आपने हिंदी में 'सचेतन कहानी आंदोलन' की शुरुआत तथा 1978 में भारतीय लेखक संगठन की स्थापना की थी। आप पिछले 45 वर्षों से साहित्यिक पत्रिका 'संचेतना' का संपादन कर रहे थे। आपने विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में राष्ट्रीय मुद्दों पर लेख भी लिखे। अपनी चार दशक से भी अधिक लंबी लेखन यात्रा में आपने लगभग 125 कहानियाँ लिखीं तथा 50 से अधिक शोध पत्र लिखे। 1959 में आपके पहले लघुकथा संग्रह 'सुबह के फूल' का प्रकाशन हुआ था। इसके बाद आपके 20 से अधिक लघुकथा संग्रह प्रकाशित हुए। आपके उपन्यासों में 'ये भी नहीं', 'अभी शेष है' और 'बीच की धूप' प्रमुख हैं। केंद्र राज्य और साहित्यिक संस्थानों की ओर से आपको साहित्य के क्षेत्र में योगदान के लिए अनेक सम्मान प्राप्त हो चुके हैं तथा 2009 में आपको 'भारत-भारती सम्मान' से भी विभूषित किया गया था।

साभार : जागरण.कॉम

हिंदी सेवी दाभोलकर जी

4 अक्टूबर, 2015 को समर्पित हिंदी-सेवी, शिक्षक, प्रचारक, प्रशिक्षक, लेखक, अनुवादक, संपादक, व्याकरणाचार्य, समाज सेवी, राष्ट्र प्रेमी श्री गोविंद मधुसूदन दाभोलकर का 76 वर्ष की आयु में निधन हो गया।

आपका जन्म 5 अक्टूबर, 1939 को कोंकण के केऊस गाँव में हुआ। आप पिछले 56 वर्षों से हिंदी की सेवा में कार्यरत रहे। आपकी प्रारंभिक शिक्षा सिंधुदुर्ग में तथा महाविद्यालयीय शिक्षा रुइया कॉलेज मुंबई में हुई। कला एवं शिक्षा क्षेत्रों में स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के बाद आपने पुस्तकालय विज्ञान में डिप्लोमा प्राप्त किया और जीवन यापन के लिए शिक्षा क्षेत्र को अपनाया। आप महाराष्ट्र के हिंदी अध्यापकों के प्रशिक्षक, मार्गदर्शक, परामर्शदाता के रूप में जाने जाते थे। आपको आदर्श शिक्षक का राज्य पुरस्कार, पंडित दीनदयाल उपाध्याय पुरस्कार, एस. एम. जोशी हिंदी प्रचार एवं साहित्य पुरस्कार, पद्मश्री अनंत गोपाल शेवडे हिंदी सेवा पुरस्कार, श्री स्वराज्य प्रसाद त्रिवेदी हिंदी सेवी सरस्वती सम्मान सिंगापुर इत्यादि प्राप्त हो चुके हैं। आपके देहान्त के दो दिन पूर्व आपको अखिल भारतीय हिंदी संस्था संघ, नई दिल्ली द्वारा पुरस्कृत किया गया।

'प्रायोगिक हिंदी व्याकरण रचना', 'गोमंतक हिंदी वाचनमाला', 'व्यावसायिक हिंदी शब्दलेखन', 'मानक हिंदी वाक्यरचना', 'जनसंख्या विस्फ़ोट', 'हिंदी बालवाणी', 'हिंदी सुलेख का अभ्यास', 'उच्च माध्यमिक प्रशिक्षण मार्गदर्शिका', 'हिंदी व्याकरण', 'हिंदी स्वयं अध्ययन माला' (7 भाग दो खण्डों में प्रकाशित), 'हेल्प इन कन्वर्सेशन' (तीन पुस्तकें हिंदी-अंग्रेज़ी, अंग्रेज़ी-हिंदी, अंग्रेज़ी-कोंकणी) आदि आपकी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं।

दाभोलकर जी एक सफल संपादक, उत्तम लेखक तथा अनुवादक थे तथा उनके हस्ताक्षर मोती जैसे सुन्दर थे। आप आठ साल तक महाराष्ट्र के वर्तमान पत्र 'दैनिक लोकसत्ता' के 'दसवीं मार्गदर्शन' स्तंभ के समन्वयक एवं मार्गदर्शक रहे। आपका शैक्षिक, साहित्य, व्याकरणिक लेखन तथा अनुवाद कार्य में योगदान सराहनीय है।

स्रोत : श्रीमती वर्षा डिसूज़ा का आलेख, विश्व हिंदी पत्रिका 2015

विश्व हिंदी सचिवालय तथा समस्त हिंदी जगत की ओर से स्वर्गीय महानुभावों को भावभिनी श्रद्धांजलि।

अंतरराष्ट्रीय हिंदी निबंध प्रतियोगिता 2015 के परिणाम

विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा विश्व हिंदी दिवस 2016 के उपलक्ष्य में एक अंतरराष्ट्रीय हिंदी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। परिणामों की घोषणा जनवरी, 2016 में विश्व हिंदी दिवस समारोह के अवसर पर की गई। पाँच भौगोलिक क्षेत्रों के आधार पर प्रतियोगिता की पाँच श्रेणियाँ नियत की गई थीं। प्रस्तुत हैं 5 भौगोलिक क्षेत्रों के परिणाम :

<u>*प्रधान संपादक*</u>

श्री गंगाधरसिंह सुखलाल

<u>*सहायक संपादक*</u>

सुश्री श्रद्धांजलि हजगैबी

<u>*संपादन सहयोग*</u>

श्रीमती उषा राम, सुश्री त्रिशिला सोमर,
सुश्री दिया लक्ष्मी बंधन, सुश्री चित्रलेखा रामदोयाल

***

विश्व हिंदी सचिवालय
स्विफ्ट लेन, फ़ॉरेस्ट साइड 74427, मॉरीशस
World Hindi Secretariat
Swift Lane, Forest Side 74427, Mauritius
फ़ोन/Phone: (230) 676 1196 * फ़ैक्स/Fax: (230) 676 1224
इमेल/Email: info@vishwahindi.com
वेबसाइट/Website: www.vishwahindi.com

***

Printed by

BAHADOOR PRINTING LTD.

Avenue St. Vincent de Paul-Pailles

Tel: (230) 2081317